लाल गुलाब

LAL GULAB

Translated from the book LAL GOLAP with ISBN 978-93-81687-18-5

By SUSHANTA DAS

Published by kamalini Prakashani Bibhag (Dey's), Kolkata, in 2012.

लाल गुलाब

आओ भाइयों !

बन्दूक फेको और हाथ में ले लो,

एक लाल गुलाब l

आज सुबह,

सड़क किनारे जिस लाश को फेंकी थी तुमने,

उसी के खून की छीटें

अखबारों से होते हुए टपक रही है,करोड़ो देशवासियों के ड्राइंग रूम के कोने में l

जरा देखो तो एकबार,

उसके दो नन्हे नवजात

कातरता से ताक रहे हैं,

अपनी अम्मा और दादी को,

जो आँगन में असहाय होकर चीख रहे हैं l

उनके बाप की लाश

अखबारों के प्रथम पृष्ठ पर,और

पीच-सड़कों की धूल मिट्टी में

सड़ रही है।

आओ भाइयों !

बन्दूक फेकों और हाथ में ले लो

एक लाल गुलाब।

फिर से एक कलेजे पर कटार ठोकने से पहले,

जरा ताको ,उसकी माँ की ओर,

सड़क किनारे भीख की झोली हाथ में लिए खड़ी हैं,

एक असहाय विधवा माँ।

भाइयों!रुक जाओ !

बन्दूक फेकों और हाथ में ले लो,

एक लाल गुलाब।

यदि उन बिन बाप के बच्चों को

तुम चॉकलेट -लॉलीपॉप न दे सको,

तो कम से कम,

एक लाल गुलाब उन्हें देकर गोद में उठा लो।

उनके गाल छूकर एकबार तो बोलो,

'ऐ लड़के !हम तुझसे स्नेह करते हैं। "

जीवन तो एक ही है ,

आओ भाइयों !बन्दूक फेकों

और हाथ में ले लो

एक लाल गुलाब।

कुछ देर तो ठहरो

अभी अभी तो आयी हो,

अभी भी बकुल शेफाली रजनीगंधा की झाड़ियों में,

तितलियाँ दिख रही है,खिड़कियों से।

अभी भी संध्या -दीप द्वार पर जल उठा नहीं ,

अभी ही जा रही हो,मुझे छोड़कर ?

अभी अभी तो आयी हो।

चाय की प्याली में मौज होकर

गुनगुनाकर गीत भी तो गाए नहीं हम।

बरामदे की धुँधली अंधियारी में

चली हो मेरे साथ दो एक कदम ?

बोलो ?

अभी ही जा रही हो मुझे छोड़कर ?

अभी अभी तो आयी हो।

थोड़ा अँधेरा फैलने दो शाम के आवरण में ,

तारों को जगमगाने दो विस्तृत गगन में।

दो बूँद मदिरा पान करने का,

वक्त तो दोगी मुझे ?

अभी ही जा रही हो मुझे छोड़कर?
अभी अभी तो आयी हो ,
कितनी बातें अनकही रह गयी अभी भी
कितनी बातें अनसूनी भी रह गयी तुमसे
छूकर देखा ही कहाँ,
तुम्हारा काँपता बदन
इस तरह अकेला छोड़ जाओगी मुझे ?
कुछ देर और ठहर नहीं सकती
आज की रात ?
अभी अभी तो आयी हो।

ताजमहल

उस मैदान में सूरज मीठे स्वरों में उगता है ,
उस मैदान में पवन मंद मंद बहता है।
जूही के पौधों से मैदान को सजाया है ,
गेट पर लाल अक्षरों से तुम्हारा नाम लिखा है।
गेट से एकांत पथ से होते हुए,
दोनों ओर देवदारु-साल के वन महकते हैं।
वन में कोयल कूकती है,
आम्र -पल्लवों पर दोयल बैठती है।

एक ही स्वर में गाये जाती है ,

"प्यार है,प्यार है,

दूर या पास,एक ही स्वर में,

बंसी की पुकार है,

प्यार है ,प्यार है l "

प्रातःकाल उस वन में

ओस से गीले तुम्हारे पैरों में

पायल झनकती है l

सुबह-शाम गीत बजता है,

"प्यार है,प्यार है l

दूर या पास,एक ही स्वर में

बंसी की पुकार है,

प्यार है ,प्यार है l "

वन के उस पार छोटी सी झील,जहाँ

स्वच्छ जल में कोमल खिला है l

झील के एक किनारे

एकमंजिल का छोटा सा यह घर

बरामदे में बैठा हूँ और

तुम्हारी मुस्कान,तुम्हारी यादें,

तुम्हारी छुअन,तुम्हारी बातें l

उभर उभरकर आती है,

झील के निर्मल जल में,

उस घनघोर वन में,

मेरे इस मन में।

उस मैदान में ,

उस वन में,

मैंने अकेला घर बसाया है ,

तुम्हे पास रखूँगा,इसलिए।

तुम्हे दिल में रखूँगा,इसलिए,

तुम्हारे घर का नाम दिया है -ताजमहल।

सुन रही हो ?

कान देने से ही सुन पाओगी।

कोयल- डोयल गाये जाती है।

मीठे स्वरों में गए जाती है।

"प्यार है,प्यार है।

दूर -पास, एक ही स्वर में,

बंसी की पुकार है।

प्यार है ,प्यार है।"

धूप छाया

जहाँ पारुलवन में हल्की हल्की ठंडी हवा,

जहाँ सालवनों में अकेला पवन लहराता है।

जहाँ शैवाल बरगत की जड़ों को ढक देता है ,

जहाँ जंगली घासफूस पर पीला टिड्डा बैठता है।

वहां पटसन के खेतों में बस तुम्हे देखना चाहता हूँ ,

कापते सीने के भीतर सिर्फ तुम्हे पाना चाहता हूँ।

जहाँ दूर कहीं बाँस के जंगल और तालाब,

जहाँ लौकी की लताएं और बैलगाड़ियाँ ,

वही वन के उस पार तुम नहाने आती थी

और झाड़ियों की आड़ में मैं घंटों खड़ा रहता।

जहाँ झील के उस पार ,

जल के ऊपर बादलों की कट्टी।

जहाँ खेतों में

थोड़ा सा साग लेने के लिए

तुम मुझसे कितना लड़ती ,

उसी वन में उम्र के इस मोड़ में

मैं अकेला इस घर में, बैठा हूँ।

और कमरे के द्वार पर धुप चमकती है।

वही,बगल में,

लुकाछिपी खेलते हैं धूप छाया

जहाँ तुम रहती हो अभी,

तारों के उसी देश में मेरा मन भी चला गया

रोता ही रहता हूँ सारी दोपहर,सारी शाम।

तब तुम नींद में मगन रहती हो

तारों के देश में

हाय !तुम्हारा घर है उसी नीले आसमान में तारों के देश में।

प्रातःकाल में

इंद्रधनुषी गगन,

क्यों पुकार रहे हो ऐसे ?

अभी मेरा कहाँ समय है,गीत गाने का ?

कहाँ समय है हल्की मुस्कान का ?

चलो,कुछ दूर तक साथ चले

प्रातःकालीन उदासी की बातें करे।

प्रातःकाल में ,

लाल कमलों की नालों को देखा ,

महुए के फूलों ने मन को छू लिया।

प्रातःकाल में,

जंगली पौधों के वन में पानी ही पानी,

प्रातःकाल की तूलिकाओं में रंग भरा था,

प्रातःकाल में मन के भीतर हिम की छूअन,

प्रातःकाल तुम्हे पास पाना चाहता मन।

पैरों के पास जैसे कोई नदी आकर गिरी।

सिर्फ तुम्हे ही ढूंढता हूँ मैं घड़ी -घड़ी।

प्रातःकाल कितने कुछ लगते अजीब जैसे।

पर जिंदगी चले जिंदगी के जैसे।

प्रातःकाल घर छोड़ा हूँ ,

मन के साथ चल पड़ा हूँ

मन ही मन

न जाने किन ख्यालों में।

दस साल की भारतमाता

आसमां !आसमां !

बिटिया,दौड़कर आओ,भूख लगी है l

कहाँ गयी आसमा ?

"अभी आ रही हु अब्बू।।।।।।।।।।"

दोनों हाथों में दो कैन लेकर

दौड़कर आयी,

दस साल की आसमां,

मैले फ्रॉक पहनकर

नंगे पाँव दौड़कर आयी दस साल की आसमां l

अब्बू,भाईजान और दादा राजमिस्त्री का काम करते हैं l

दो मील चलती है छोटी आसमां l

बासी भात और आलू लायी है दोपहर के लिए l

ईंट के ऊपर बैठ जाते हैं चारों लोग l

थाली में थोड़ा पानी डालकर ,आलू के साथ

जल्द जल्द भात परोसती है ,अब्बू और दादा के लिए l

खाना परोसकर,अब्बू के गोद में,

सर रखकर

थोड़ा आराम करती है आसमां l

सर पर हाथ फेरकर अब्बू कहते हैं -

"आसमां !अब तुमलोग खा लो l "

एक थाली में खाना परोसकर ,

छोटे भाई की बांहे पकडे,

कुछ दूर जाकर बैठी आसमां l

भाई बहन खाए एक ही थाली में -

"भाईजान,खाने से पहले हाथ धो लो l "

आसमां थोड़ा सा चावल मुँह में लेती है ,

बाकी भाईजान खा लेता है मिनटों में l

आसमा के चेहरे पर मीठी मुस्कान ,

दुबले देह की हड्डियां निकल आयी है l

पहनावा एक मैला फ्रॉक l

कैन में बचे बासीभात के पानी को एक घूँट में पी जाती है l

अब्बाजान चिल्लाते हैं -

"आसमां !आसमां !बिटिया,तुम खायी हो ?

दौड़कर आती है दस साल की भारतमाता l

"मैं खा चुकी हूँ अब्बू ,इतनी चिंता मत करो l

दस साल की भारतमाता दौड़ती रहती है इस पार उस पार l

दस साल की भारतमाता दौड़ती रहती है देश भर।

वक्त

जरा सा वक्त छोड़कर आया हूँ तुम्हारे साथ,
जरा सा वक्त छूकर आया हूँ तुम्हारे साथ।
उस वक्त तो धूप थी,कुछ लाल, कुछ पीली ,
उस वक्त मूसलाधार वर्षा से धरती थी कुछ गीली।
उस वक्त थी तुम्हारी शीतल छुअन,
सुख की पीड़ाओं से भरा था मन।
उस वक्त केवल डर से भरी अकेली दोपहर,
और दो तनो को ढकती एक चादर।
उस वक्त जैसे थी सिर्फ लज्जा ही।
कुछ पल छोड़ आया हूँ ,
कुछ टूटी -बिखरी यादों से घिरे पल।
कुछ वक्त,तुम्हारे साथ, तुम्हारे जैसे ,
कुछ वक्त,सीने में,शाम और सुबह,पागलों की तरह।

रूदन

तुम्हे रुलाकर चला आयाथा ,

राह में तुम्हारी रूदन,बारिश बनकर

बरस रही थी लगातार।

पुरुषत्व के मोह में वस्त्र खोलकर,

हवा में उड़ाकर

बारिश को कुचलकर,,पीछे धकेलकर

आगे बढ़ता जा रहा था।

बारिश तब भी रूदन की तरह ,

मेरे सीने को.चेहरे को,सारे शरीर को छूते हुए,

बरस रही थी।

घर लौटकर साबुन लगा लगाकर बारिश को धो दिया था सारे शरीस से।

सीने के भीतर सिर्फ

कुछ बूंदे छिप गयी थी।

देख तो सकता था ,पर छू नहीं सकता था।

और फिर रात को,

सीने में होने लगा भयंकर दर्द।

हर रात की असह्य पीड़ा सीने के भीतर।

कुछ बूंदों ने धीरे धीरे बाढ़ की नदी का रूप ले लिया ,

और मुझे,मेरे पौरुष को लहरों ने डुबो दिया।

निद्रारहित रातों में सिर्फ हाहाकार ,

कौन सिर्फ रोता ही है ?

उसे छूना चाहता हूँ,पाना चाहता हूँ ,

पर वह दूर,और दूर चली जाती है ,

उसकी मूक वेदना में मैं भीग जाता हूँ।

भीगता रहता हूँ।

उसदिन से यदि बारिश हो,

तो मैं भीगता रहता हूँ ,

बारिश को छूना चाहता हूँ ,पाना चाहता हूँ।

और बारिश मेरे सीने से,चेहरे से,शरीर से होते हुए बरसती जाती है।

वर्षा विडम्बना

शहर में वर्षा आयी

गांव में भी वर्षा आयी।

शहर में पानी जम गया है।

शर्ट पैंट मोड़कर चलने वाली एड़ी

ज्यों ही भीगने लगी ,

त्यों ही टीवी में खबर बन गयी l

महानागरिक दौड़कर आए l

जैसा कि सब तबाह हो गया ,

बड़े बड़े शॉपिंग मॉल में कुछ दिन न भी जाओ

क्या वह भी बड़ी खबर हुई ?

टीवी में ताज़ी खबर हुई ?

गांव के गरीब लोगों के घरों में

कमर तक पानी,

चारपाई को छूता है l

सांप और जोंक से घर भर गया है l

एक बच्चा घर के अंदर

पानी में डूबकर मरता है l

कौन किसकी खबर रखता है ?

शहर में वर्षा आयी

गांव में वर्षा आयी

सातदिन तक बारिश हुई ,

शहर के व्यस्त जीवन में नहीं कोई तकलीफ ,

फिर भी ,

अख़बार के पहले पन्ने पर

निकासी की ताज़ी ख़बरें

सातदिन तक बारिश हुई

गांव में कुछ और ख़बरें

डी वी सी से पानी छूटा

कैनिंग में बाँध टूटा।

घर -घर में पानी ही पानी,

लोगों को हुई हानि ही हानि।

लोग बेघर होने लगे ,

अब रेल की पटरियां ही रही भरोसे उनकी।

कौन रिपोर्टर है,

जिसने एकबार भी खबर ली हो।

गरीब आदमी है ?

क्या कीमत है जान की ?

सड़ने दो ,मरने दो।

शहर में वर्षा आयी, मोहल्ले उजड़ गए।

शहर में वर्षा आयी,गांव बह गए।

शहर में वर्षा आयी,गांव में भी वर्षा आयी।

कविता नहीं लिखी

मैंने कभी भी कविता नहीं लिखी ,

जिसदिन देखा तुम्हे पहली बार ,
उसी दिन कविता ने मुझसे लिखा लिया था
तुम्हारा नाम।
तुम्हारे चारों तरफ उड़ती तितलियों के रंग ,
उस रंग में रंग चूका था ,
तुम्हारा इंद्रधनुषी चेहरा।
कविता ने मुझसे लिखा लिया था कितना कुछ।
जिस दिन बारिश हो रही थी ,
 सारा शहर डूब चूका था ,
पर मैं उसदिन खुद ही में व्यस्त
नाव बना रहा था कागज़ के कैनवास में।
टिपटिप बरसता पानी में
अधगीला होकर बैठा था,बालकनी में।
कविता तो नहीं लिखी कभी।
तुम ही तो उसदिन अचानक आ गिरी
मेरी बालकनी के एक कोने में।
उसदिन भी कविता ने मुझसे लिखा लिया था
घनघोर वर्षा वाली शाम का चित्र।
सफ़ेद साडी से वर्षा की बूँदें लिपटी थी
तुम्हारे शरीर से।
केशों को छूती बूंदे कही खो जा रही थी

सीने के भीतर ,

मेरा नाव

मेरी छोटी सी तैरती तरी

सब तबाह हो चूका था उस तूफान में

उस शाम की धुंधली अंधियारी में

कविता ने लिखा लिया था कितना कुछ ,

मैंने कविता नहीं लिखी कभी।

ऐ बारिश सुन

ऐ बारिश सुन, बात सुन !

थोड़ा मेरे पास तो आओ।

मुझे छूकर देखोगी न,इसलिए तो

खिड़की के पास बैठी हूँ

तब से बैठी ही हूँ।

अभी तो देखा

दूर के मैदानों में पेड़ -पौधों के घने वनों में,

स्वच्छ नील नदियों में ,

तो कभी वनो में,धान के खेतों में ,

खूब बरस रही हो तुम।

ऐ बारिश,भागती हो कहाँ ?

ऐसे मुझे भिगोकर ?

नशे में चूर देखूंगी तुम्हे ,

इसलिए तो खिड़की के पास बैठी हूँ।

तब से बैठी ही हूँ।

अभी देखा,

फिर देखा,एक ही बार में ,

घासफूस की झाड़ियों में।

नीम्बू के खेतों में

रिमझिम खूब बरसती हो तुम।

खूब बरस रही हो ,खूब मौज में हो।

ऐ बारिश सुनो ,मेरी बात सुनो।

जरा इधर तो आओ।

दुपट्टे से घूँघट ओढ़ दूँ ,

इन बादल भरी सर्दियों में ,

तुम्हारे कान अच्छे मोड़ दू।

तुम्हारे माथे के दाहिने ओर ,

काजल की बिंदियां लगा दूँ।

ऐ बारिश,जरा पास तो आओ ,

बड़ी चंचल हो,दिनभर खेल में लगी हो।

अभी देखा ,

बादल से कट्टी कर

जमीन का दामन थामी हो।

जलकुम्भी में,कमल की नालों में ,

नील तालाबों में ,

हर तरफ बरस रही हो

खूब मौज में हो।

ऐ बारिश,दौड़कर आओ

हवा के झोकों के संग आओ।

बादलों को छूते हुए आओ।

हवा के साथ उड़ने वाली

भूरी चिड़िया के होठों को छूकर आओ।

ऐ बारिश,दौड़कर आओ।

उस नदी के किनारे,

जलकुम्भी में,कमल की नालों में,

वही तो मेरी झोपडी है।

तुम आओगी इसलिए तो

खिड़की किनारे बैठी हूँ ,

तब से बैठी ही हूँ।

मुझे छूकर देखोगी न,

इसलिए तब से बैठी ही हूँ।

यदि प्रेम करते हो

यदि प्रेम करते हो,

मुझे थोड़ी सी धुप ला दो।

थोड़ी सी बारिश छूने दो।

मई लौट जाना चाहता हूँ बचपन में।

कुंहासे में ढके भोरकाल के उन दोस्तों को फिर से ला दो।

जिनके बेल की आवाज़ से नींद खुलती थी।

पैरों में ओस की बूंदे लगाकर दौड़ता रहता था मैदानों में।

कुंहासे में ढके भोरकाल के उन दोस्तों को ला दो।

यदि प्रेम करते हो ,

तो एक बार अवसर दे दो ,

फिर से बचपन में लौटना चाहता हूँ।

यदि प्रेम करते हो

मुझे वह बादलों वाली हवा ला दो।

उदासी वाली वह पीली शाम ला दो।

आँखों को फिर से ढक दो।

मैं खोये हुए हुए न जाने और कितने ही जाने पहचाने चेहरों को छूना चाहता हूं।

यदि प्रेम करते हो ,

गर्मियों की वह अंगराई लेती दुपहरी लौटा दो।

वह बांसूरीवाला

निरंतर बांसुरी बजाता हुआ चलता था दूर दूर तक ,

मैं नंगे पांव पीछे पीछे दौड़ता रहता

उस खिलौनेवाले को हर गली में ढूंढ़ता

यदि प्रेम करते हो ,

मुझे उस कच्छी सड़क वाली नीरव दुपहरी लौटा दो।

यदि प्रेम करते हो

माँ की गोद में लौट जाने दो।

आराम से थोड़ा खेलना चाहता हूँ।

यदि प्रेम करते हो ,

मुझे एक अवसर तो दे दो

मैं लौट जानाचाहता हूँ बचपन में ,

बस एक अवसर तो दे दो ,

लौट जाना चाहता हूँ बचपन में।

जिंदगी

काली वातानुकूलित गाडी का पॉवर विंडो ,

धीरे धीरे नीचे उतरने लगा ,

जूठी कोल्ड्रिंक्स से भरी बोतल

बिखरकर गिर पड़ी सड़क के बीच में।

हवा के झोंकों की तरह सभ्यता विलीन हो गयी ,

लोगों के जुलूस में।

कहानी यही ख़त्म हो सकती थी ,

क्योंकि काले शीशे से घिरी सभ्यता

ऐसे ही उपेक्षा करती आयी है ,बाहरी दुनिया के जीवन को।

जिंदगी नया कुछ चाहती है ,

नए मित्र बनाती है।

सड़क किनारे बसा एक जीर्ण परिवार,

पांच साल का लड़का प्राणों की बाजी लगाए

सड़क पार कर उठा लाता है,उस बोतल को।

चेहरे में ख़ुशी ऐसी ,

मानो दुनिया को जीत ली है।

ठिठुरते माँ बाप के पास आकर ,

ढक्कन खोल उन्हें कोल्ड्रिंक्स पिलाता है।

माँ के गोद की अपनी छोटी बहन को कोल्ड्रिंक्स पिलाता है ,

फिर एक घूट में बाकी पीने लगता है।

माँ बोतल छीन लेती है ,

बाप के मुँह में थोड़ा डालकर बाकी खुद पी जाती है।

काली कांच की उपेक्षा के साथ

शुरू हुई थी जो कहानी ,

जिंदगी ने कभी उसकी उपेक्षा नहीं की।

सड़क में पड़ी हुई

एक झुठी बोतल

एक अधमरे परिवार को

ऑक्सीजन देकर जिंदगी देती है।

ऐसे ही वे जिन्दा रहते हैं हज़ारों साल,

हर एक धिक्कार से जिंदगी के फुल खिलते हैं

सहस्त्र जीवन में।

खून चूसने वाला कौआ

सुबह सुबह बिटिया जिद करने लगी।
क्या कुछ मज़ेदार चीज़ दिखाएगी मुझे ,
जिद्दी बिटिया को मना न कर सका ,
और दबे पैरों में चलने लगा ,
बैडरूम की खिड़कियों के पास ,
नीम की ऊंची टहनियों पर
एक कौआ बैठा था।
मुँह में थी लाल रंग की बड़ी मछली।
कौए से भी बड़ी होगी मछली ,
ख़ुशी में फूला न समाया
कौआ समझ न पाया ,
कहाँ रखेगा उसे।
मैं तंग आ गया ,
इसमें कौन सी नयी बात है ?
न जाने क्या मिला बिटिया को ,
बिटिया समझ गयी मेरे मन की बात ,
दस साल की बिटिया कह उठी ,
"पापा ,मेरा एक सवाल है।

क्या मैं उस कौवे को जॉर्ज बुश
और उसके मुँह की वस्तु को
सद्दाम हुसैन कह सकता हूँ ?
चौक गया था ,
यकीन मानिए ,
एक पल के लिए,चौंक गया था।

द्विचारिता

रेल की पटरियों के किनारे

शामियाना लगाकर ,

जो घर बसाए हैं ,इन सर्दियों में ,

जानता हूँ ,वे नहीं पढ़ेंगे यह कविता मेरी l

उनके घरों में डेंगू,मलेरिया जैसी महामारी l

किसी एक स्वर्णिम शाम को

रवीन्द्रसदन,बंगला अकादमी अथवा जीवनानंद सभाघर में

इस कविता का पाठ होगा l

श्रोताओं में यदि तालियां गूंजेगी भी ,,,,तब भी

निराशा ही छिपी रहेंगी

रेल पटरियों के दोनों किनारे बस्ती के घर घर में l

उनकी दुखद कहानी

सब जान गए थे ,वातानुकूलित सदनों में ,

तालियां बजायी थी न जाने कितने विद्वानों में ,

परन्तु दिया नहीं किसी ने कम्बल या दवाई l

पटरियों के किनारे हज़ारों

शामियानों के नीचे ,

बस्तियों में

न जाने कितने युगों से

कवियों के पैरों की निशानी नहीं पड़ी है ,कभी ,

इसीलिए तो मेहनती ,श्रमजीवी

आधे पेट भोजन किए कविता नहीं पढ़ते कभी।

स्मृति

वह दिन आज भी स्पष्ट है ,

मेरी हल्की -हल्की स्मृतियों में ,

छुपकर नंगे पैरों में तुम्हारे घर पहुँच गया था।

ज़ीरो वाट वाली हरी बत्ती की रौशनी ,

आँधियारी के साथ खेल रही थी

यहाँ वहां।

शाम को तुम्हारे घर में

बादलों के साथ बातें कर रहा था मैं।

तीसरी मंज़िल की बालकनी से

वट पीपल की आड़ में से

साफ़ देख प् रहा था

लोकल ट्रैन का आना जाना।

कंप्यूटर में धीमा ग़ज़ल बज रहा था। ..

"चुपके चुपके रातदिन आंसू बहाना याद है। ...

हरी रौशनी और आँधियारी से घिरी खिड़की को
बार बार छूना चाह रही थी
कामिनी फूलों की पत्तियां l
चश्मे को नाक तक उतारकर
तुम झूम रहे थे ग़ज़ल के संग संग
उस निस्तब्ध शाम को
पीठ पर पांच सात तकिए रखकर
मै भी लगातार सोच रहा था
किशोरावस्था के उन दिनों को
जब तकिए में मुँह छिपाकर
रोता था दिनरात
सिर्फ तुम्हारे लिए
तुफानो की तरह
अपने नायक की स्कूटर से
रोज़ प्रातःकाल कॉलेज जाया करती थी तुम ,,
मेरी आँखों के सामने धूल उड़ाती हुई l
विरह के वे दिन आज भी याद आते हैं l
बगल वाले घर की छत पर
लुकाछिपी खेलता था लाल चमकता चाँद
तुम भी चाँद मुखड़े लिए
ग़ज़ल के संग संग

झूमती रहो।
समय बेहटा जाता है धीरे धीरे
वह दिन आज भी स्पष्ट है
मेरी हलकी स्मृतियों में।

तुम कहा हो ?

तुम कहा हो मैं नहीं जानता
कैसी हो मैं नहीं जानता
सिर्फ इतना जानता हूँ
कि तुम हो
पूरब -पश्चिम ,उत्तर -दक्षिण में
पृथ्वी की दैनिक परिक्रमा में
तुम हो ,साफ़ झलकती हो।
जिस कदम के पेड़ के नीचे
जमीन खोदकर
हम तुम पानी देते थे
वह जिन्दा है ,
फूलों,फलों और महक से भरा वह

जिन्दा है ,मस्त है।

जिस खिड़की के पास तुम रोज़ बैठती थी ,

और मैं दिन में दसबार चक्कर लगाता था ,

आज देखा उस खिड़की में

नयी हरियाली खिल उठी है।

उस खिड़की के पास एक अमरुद का पौधा लगाया था

वह पौधा भी आज पेड़ बनकर

गगन को छुने लगा है।

कहो , समझूंगा कि तुम नहीं हो ?

जिन राहों से गुज़रा हूँ सुबह शाम ,

वहां आज भी गूंजता है तुम्हारा नाम।

फर्क सिर्फ इतना ही है,

कि बचपन के भोरों में

ओस के गीले जो तिनके तुम्हरा पांव छूते थे ,

आज वही ओस से धूल घास पर फूल खिले हैं।

उन बचपन के डीनो में सूरज खिलता था ,

तुम्हारे छत से होते हुए ,

आज कड़ी धुप है मेरे सर के ऊपर

बीच गगन में

आँखे झुलस जाती है मेरी,

बस यही तो फर्क है

बचपन के शामों में
तुम्हे देख पाने की चाह से ही संध्या उतर आती थी,
और आज
रात कट जाती है तुम्हारे नशे में,
पीले चाँद को निहारते हुए।
उसदिन बचपन की ज्योत्सना रुपी मायावी रौशनी
तुम्हारे आँगन के लाल सफ़ेद फूलों को छुती थी ,
आज भी चैत के सेमल फूल मुझे पुकारते हैं।

प्रियतमा को

अगर उसे देख पाओ तो
एकबार कह देना ,
उसके घर के बगल की
बैगनी फूलों की आड़ में
अभी भी दो तितलियाँ आती हैं ,
सिर्फ वह नहीं हैं,इसीलिए ,
तितलियों को कोई पकड़ता भी नहीं और।
वे चैन से आकर बैगनी फूलों को छूकर
दे जाते हैं प्यार भरी छुअन।

अगर उसे देख पाओ तो,

एकबार कह देना ,

जहाँ हम लुकाछिपी खेलते थे ,

और खेलते खेलते छिप जाते थे।

वहां एकबार उसकी पायल गम हो गयी थी

और वे पायल मेरे हाथों होते ही ,मैंने उन्हें संभलकर रख दिया था।

सिर्फ वह नहीं है,इसीलिए

झूमझूम करती वह नशीली शाम खो दी है मैंने।

अगर उसे देख पाओ तो

एकबार कह देना

जगत की रीत से मेरे बाल पक गए हैं।

उसके भी दो एक बाल पके होंगे ,

फिर भी,आज भी उसे देखने की चाह लेकर सोता हूँ

और आँखें खुलने पर असहाय होकर

उसे ही ढूंढता रहता हूँ।

अगर उसे देख पाओ तो

एकबार कह देना ,

मैंने खो दिए हैं उसके घर के ठिकाने

बंद हो गए हैं सारे रस्ते

पर उसे तो पता है,मेरे घर के ठिकाने ,

मेरी गलियां ,चौराहे।

तो और कब तक राह देखता रहूं

जिंदगी तो ख़त्म होने को है

एकबार सिर्फ एकबार उसे इस तरफ देखने को कहो ,

जिंदगी तो ख़त्म होने को है

अगर उसे देख पाओ तो l

क्या करूँ ?

सुबह आँखें खुलते ही अगर तुम याद आओ ,

तो क्या करूँ मैं ?

क्या तुम जाग गए हो ?

या अभी तक खर्राटे लेकर सो रहे हो ?

अगर जानने को जी चाहे

तो क्या करूँ मैं ?

अगर जानने को जी तो क्या करूँ मैं ?

सुबह फ़ोन में गुड मॉर्निंग बोलने को जी चाहे

तो क्या करूँ मैं ?

क्या तुम नाश्ता कर निकले हो ?

क्या ऑफिस का ट्रैन मिला ?

क्या काले शर्ट के साथ लाल टाई पहने हो ?

क्या शेव कर निकले हो ?

काले या भूरे फ्रेम के चश्मे पहने हो ?

सबकुछ लगातार दिमाग में घूमने लगे

तो क्या करूँ मैं ?

क्या प्रेशर की गोलियां लिए हो ?

धुप तुमको छु पायी है

या खुद धुप के पीछे भाग रहे हो ?

हरियाली तुम्हे छू पायी है

या खुद हरियाली की पुकार से

मैदानों और समतलों में लेटे हुए हो ?

तुम्हारी व्यस्त जिंदगी में

गाड़ियों की आवाज़

और तुमको घेरकर बढ़ रही लोगों की व्यस्तता

सब जान्ने को जी चाहता है ,

तो क्या करूँ मैं

तुमने लंच किया ?पानी पिया ?

दिन में एकबार भी मुझे याद किया ?

एकबार भी मेरा नाम लेकर पुकारा ?

इतना कुछ कैसे छिपाकर रख सकती हूँ ?

इसलिए तो फ़ोन करती हूँ बार बार l

क्या कौन मैं ?

दिल तुम्हे छूना चाहता है ,

पाना चाहता है l

नींद में भी तुम्हे सीने में लेकर जिन्दा रहती हूँ l

धड़कने मेरे बस में नहीं हैं ,

क्या करूँ ?

दिल मेरी बात नहीं मानता

क्या करूँ ?

एक ही धरती

यदि एक धरती का एक ही है आसमान

तो आओ दोस्तों ,

तितली,टिड्डी ,बनकर उड़ चले

पतंग में लम्बा पूछ लगाकर

ड़ोर हाथ में लिए दौड़ चले

होकर मस्तमगन l

क्या ज़रूरत है इतने कृत्रिम मकानों की ?

गरीबों की इतनी झोपड़ियां और

अमीरों की दस बीस मंज़िलें इमारतों की क्या ज़रूरत ?

यदि एक धरती का एक ही है आसमान ,

तो ,चलो दोस्तों ,

खुले गगन के नीचे सब मिलकर एक ही घर बनाए।

यदि एक धरती में एक ही राजपथ है ,

तो आओ दोस्तों।

सडकों में निकल पड़े ,

मुसीबतों में कन्धों से कंधे मिलाकर चले सब एक साथ।

गरीबों के इतने इतने साइकिले ,रिक्शे और

रईसों की मारुती , हुंडई गाड़ियों की क्या ज़रूरत ?

यदि एक धरती का एक ही राजपथ है ,

तो आओ दोस्तों ,

पैरों से पैर मिलाए चले सब एकसाथ ही

यदि एक धरती में सबका एक ही जीवन है।

तो आओ दोस्तों

तूलिका में रंग भर,जीवन का चित्र बनाए।

बेबजह दंगे फसादों से

क्यों पहल से ही मृत्यु का वरन करे ?

यदि एक धरती में एक ही मानव जाती है ,

तो आओ दोस्तों

एक ही हांड़ी में चावल पकाए ,

हिन्दू मुस्लिम, सिक्ख , इसाई।

क्या जरुरत है इतने जातिभेद और रंगभेद की

यदि एक धरती में एक ही मानव जाती है ,

तो आओ दोस्तों ,

हाथों में हाथ रखे

मानव का जयगान गाए ,

एक ही हांड़ी में चावल पकाए।

बादल

बादलों की दुनिया में घर है ,

बादलों के रंग में रंगे हुए घर है ,

ऐ लड़की,तू बादल मन लेकर दिन की शुरुआत कर।

सूरज मामा लाल लाल अँखियों से झरोखों पर झाकते हैं।

ऐ बादल ,

तू आँखे खोलकर देख ,

पेड़ पौधे ,नदी तालाब ,

तेरी ओर ताक रहे हैं सब।

गगन का गीला बादल

जमीन के पास उड़कर आता है।

सर्दियों से तंग एक टुकड़ा बादल ,

जो छींकता ही रहता है ,।

बादल नींद भरी आँखों में बोल उठा ,

ओ बांके अधरों वाले लाल विहगवृन्द ,

पेड़ पौधे ,नदी तालाब ,

दूर हो जाओ सब से सब।

कल फिर आना ,

इतनी मोटी मोटी किताबें हैं मेरी ,

तो आज थोड़ा पढ़ने दो।

ये बादलों से भरा आकाश थोड़ी धूप लाकर दो ,

एक मुट्ठी धूप पकड़ने वाला बादल लेकर दो ,

देह में धुप की छुअन लेकर थोड़ा पढ़ने बैठूं।

सारे शरीर में धुप लिए -एक छोटी सी बाला है यह बादल।

किताबों की दुनिया में खो गया पूरा बचपन।

एक ही पल में बादल और बारिश का बचपन कैसे खो जाता है किताबों के पन्नो में।

स्कूल की पढ़ाई

चौथी कक्षा में पढ़ती है वह लड़की ,

बाप रे !कितनी कितनी पढ़ाई है स्कूल की l

सुबह जल्दी उठा दो नींद से ,

सोमवार को सुबह सुबह बांग्ला साहित्य पढ़ने जाना है l

सुबह आठ से दस तक का समय है l

दुर्मुख ,भजहरी ,तोता कहानी ,युद्ध युद्ध खेल,

फिर किसी तरह चावल निगलकर पीठ में बस्ता लिए ,

स्कूल की राह देखती है लड़की l

कितना बड़ा स्कूल है ,साउथ पॉइंट l

शाम को घर लौटते ही ,छह से आठ तक व्याकरण

क्रिया,लिंग,वचन,पद,काल,न जाने क्या क्या ?

आठ से दस तक बांग्ला में निबंध लेख

शब्दार्थ और फिर क्या क्या ?

फिर खाओ और सो जाओ l

मंगलवार को सुबह सुबह साहित्य ,

DEEPA'S DOLL,MR.NOBODY,THRUSH GIRL…..

और भी क्या क्या ?

शाम को थकीहारी बेचारी अंग्रेजी ग्रामर पढ़ती है ,दस साल की वह बच्ची 1

PARTS OF SPEECH,PREPOSITION,TENSE ……

मासूम चेहरे में टेंशन ही टेंशन ,,,,

बुधवार को गणित,मानो जाना है कल ही ओलिंपियाड में l

मैट्रिक मेज़रमेंट ,ऑवर ,मिनट, इनवर्स प्रोपोरशन,प्रॉब्लम सम ,

सब है,सब कुछ l

गुरुवार को इतिहास और भूगोल

तीन इतिहास और दो भूगोल की किताबें l

शुक्रवार को सुबह G.K. शाम को कंप्यूटर l

शनिवार को फिर जाना है ,

जनरल साइंस माम् के घर में ,

रविवार को क्राफ्ट ,प्रोजेक्ट और होमवर्क l

हर हफ्ते गुरु और मंगलवार को टेस्ट रहता है ,

उस मासूम की जिंदगी में न है कोई खेलकूद,न कोई मैदान l

न हवा,न ऑक्सीजन,न रिश्तेदारों से मिलना जुलना l

दादा दादी के प्यार पाने का वक्त नहीं है ,

सात दिन हफ्ते में ,सब्जेक्ट है दस के दस l

जो पढ़ती है,जो लिखती है ,कभी कभी भूल भी जाती है l

बच्ची को खा जाता है टेंशन l

खा जाता है परिवार और माँ बाप को l

कितना बड़ा स्कूल है,बाप रे बाप !

साउथ पॉइंट l

प्यारे लगते हैं ,

मुझे आसमान प्यारे लगते हैं ,
इसलिए उसे बिछाकर सोता हूँ।
मुझे पवन प्यारा लगता है ,
उसे सीने में लिए फिरता हूँ।
हरियाली का सहचर हूँ मैं ,
सपने अच्छे लगते हैं मुझे,
नींद का दीवाना हूँ मैं।
धुप प्यारी लगती है मुझे ,
इसलिए पीले है गद्दी और तकिए ,,
भगवन प्यारे लगते हैं ,
इसलिए तो करता रहता शिकायतें।
आग प्यारी लगती है ,
मेरी आँखें है ,मानो अंगारे।
तुम ही प्यारी लगती मुझे ,
सपने देखता रहता बारे -बारे।

जवाब नहीं है

यदि सवाल है ,'बादल तुम सुन्दर हो या भयंकर ?

जवाब में बादल थोड़ी धुप और बारिश लेकर उठा गरजकर l

यदि सवाल है ,"अरि कुंहासा !तुम व्यभिचारिणी हो या ग्रामीण सरला ?

सुबह की चादर ओढ़े कुहांसे गीत गाती है सुरीला l

यदि सवाल है ,"बारिश ,तुम हरी हो या पीली?

शरत की सांझ में नादान बूंदों से धरती हो उठी गीली l

यदि सवाल है "धुप,तुम प्रेमी हो या हो गंवार?

Comment [A1]:

शीत की स्निग्ध दुपहरी में अटारी में झांके धुप बार बार l

यदि सवाल है "अरे सवेरे,तुम मनहूस हो या हो चिड़िया ?

जवाब के लिए फुर्सत कहाँ?

बादलों के साथ आँखों में नींद लिए सवेरा धुप को धोखा दे गया l